

अपनी सहज याद से हम तमोप्रधान आत्माओं को सतोप्रधान बनने का रास्ता बताने वाले, पतित-पावन बाप ने याद कि यात्रा सिखलाते हुए कहा, मीठे बच्चे - कामकाज करते हुए भी एक बाप की याद रहे, चलते फिरते बाप और घर को याद करो, यही तुम्हारी बहादुरी है.

बाबा ने आज सारी मुरली में हमें याद कि यात्रा का महत्व समझाते हुए बार-बार कहा, तुम्हें चलते-फिरते, खाते-पीते, सोते-जागते, उठते-बैठते, कोई भी काम-काज करते, एक बाप की याद में रहने का पुरुषार्थ करना है, क्योंकि याद से ही हमारी आत्मा तमोप्रधान से सतोप्रधान बनेंगी और अगर हमारा शरीर छूटने से पहले हमारी आत्मा सतोप्रधान बन जाती है तो आत्मा विजयी होकर बाप के पास चली जायेगी.

बाबा ने यह भी कहा कि किसी को ज्ञान देना या लेक्चर करना या लेक्चर लिखना तो बहुत सहज है क्योंकि उसमें माया तंग नहीं करती लेकिन बाबा की याद में ही माया आती है और याद को तोड़ देती है.

बाबा कि याद हमें कैसे सतत रह सकती है?

- इस के लिए सबसे पहले हमें यह पुरानी दुनिया से पुरा वैराग्य हो. क्योंकि आज-कल देखे तो सबसे ज्यादा हमारा टाइम पुरानी दुनिया के समाचार या पुरानी दुनिया कि गति-विधियां जानने में ही चला जाता है. इस लिए हमारे मन को हमें ट्रेइन करना है कि हमारे जोब (सर्विस) के रिलेटेड काम-काज के सिवाय ज्यादा कुछ भी हमारे मन को भारी न करें.

- जब हम काम-काज कर रहे हैं और हमारा काम ज्यादा बुद्धि को युज करने का है तो बीच-बीच में टाइम निकाल करके ट्रैफिक कंट्रोल या और कोई तरीका युज करके भी बाबा कि याद में रहना है. अगर हमारा काम ज्यादा बुद्धि को युज करने का नहीं है, जैसे की बाबा ने बताया चौकीदार या ऐसे काम करते तो बाप कि याद सहज रह सकती है.

- जब हम नौकरी पर जाते हैं तो कार चलाते बाबा के सोंग्स सुनते बाबा को याद कर सकते हैं. अगर पब्लिक ट्रांसपोर्ट यूज करते हैं तो भी कान में हेडफोन लगाकर भी बाबा के सोंग्स सुनते हुए बाबा को याद कर सकते हैं.

- दूसरा इस ब्राह्मण जीवन में हमारे पुराने सम्बन्ध हैं उसे भी वैराग्य होना चाहिए. इसका मतलब है लौकिक सम्बन्ध निभाए पर उसमें ज्यादा व्यर्थ टाइम न गवाए. इस कि जगह सर्व-सम्बन्ध का रस एक बाप से लेने का पुरुषार्थ करें.

- तीसरा हमारा मन ज्यादा धन प्राप्ति के पीछे भी नहीं जाना चाहिए. अपना घर-संसार चलाने के लिए धन कमाए पर उस के लिए लोभ-वृत्ति रखकर धन कमाने के पीछे इस पुरुषोत्तम संगमयुग का अमूल्य समय बरबाद न करें.

- चौथा हमारा मन अपने शरीर को जरूरत से ज्यादा शृंगार करने में या कुछ भी हुआ न हो और फिर भी नाहक कि चिन्ता करने में न लगाये. जरूरत न हो फिर भी डॉक्टर के पास चैकिंग कराने या उसको और रुष्ट-पुष्ट बनाने में टाइम बरबाद न करें. क्योंकि बाबा ने बताया है कि इस मृत्युलोक में मनुष्य का शरीर का कोई ठिकाना नहीं, चलते-फिरते कभी भी आत्मा शरीर छोड़ देती है.

- सारे दिन के लिए हमें एक टाइम-टेबल बना देना है कि इतना घंटा तो हमें बाबा कि याद में बैठना ही हैं.

इस संगमयुग का अभी हमारे पास जितना भी समय बाकी बचा है उसमें हमारा हर सेकेण्ड, संकल्प और श्वास हमें एक बाबा कि याद में सफल करना ही है.

ॐ शांति.

Please provide your feedback to Atma Bhai on email:

a.brahmin.soul@gmail.com .